बी. ए. भाग-2
प्रधान - हिन्दी
(गबन उपन्यास)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी- विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

गबन उपन्यास के आधार पर रतन का चरित्र-चित्रण —

नारी के प्रति प्रेमचंद की सहज सहानुभूति थी। वह उसे सुखी देखना चाहते थे। भारत विधवाओं की जो दुर्दशा है, वह किसी से छिपी नहीं है। साथ ही भारत में अनमेल विवाह भी बहुत होते हैं। ये दोनों बातें पारिवारिक जीवन की सुख - शांति के लिये कितनी हानिकारक हैं, इसका अनुमान रतन के चरित्र से अनायास ही लगाया जा सकता है। वास्तव में इस उपन्यास में उसकी सृष्टि इन्ही कुरीतियों के दुष्परिणाम को दिखाने के लिए की गई है।

उपन्यास में जालपा को छोड़कर स्त्री पात्रों में उसका दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। वह जालपा की सहेली तथा इंदूभूषण एडवोकेट की दूसरी पत्नी है। रतन के चरित्र को दो भागों में विभक्त करके देखा जा सकता है- एक तो पत्नी के रूप में और दूसरे विधवा के रूप में। यह अपने जीवन में आनंद के साथ ही दुःख के दिन भी देखती है। उसका विवाहित जीवन सुख और आनन्द से परिपूर्ण है लेकिन पति की मृत्यु के उपरांत उसके जीवन में दुःख के बादल घिर जाते हैं। उपन्यास में रतन ही ऐसी स्त्री पात्र है, जिसे विधवा जीवन का क्लेश एवं पीड़ा सहन करनी पड़ती है। उसकी इस पीड़ा ने उसके चरित्र को और भी उज्ज्वल बना दिया है।

1 पत्नी रूप -

रतन साँवले रंग की एवं सुगठित थी। उसके शरीर में सौंदर्य का कोई लक्षण न था।

नाक चिपटी थी, मुख गोल आँखें छोटी, फिर भी वह रानी-सी लगती थी। ऐसी रतन का विवाह साठ वर्ष की आयु वाले वकील इंदुभूषण से होता है। रतन के मामा ने वकील साहब से इस विवाह के लिए अवश्य ही रुपये लिए होंगे - ऐसा रतन भी सोचती है। वह खर्च करने के लिए स्वतंत्र है। जो कुछ वकील साहब वकालत में कमाते हैं, वह सब रतन के हाथ पर रख देते हैं। रतन जालपा से कहती है - "मुझे तो उन पर दया आती है। अपने से जहाँ तक हो सकता है, इनकी सेवा करती हूँ। आखिर यह मेरे लिये तो अपनी जान खपा रहे हैं।" रतन के पत्नी रूप में सदानुराग, सरल प्रेम, धर्म परायणता, पति-भक्ति, सेवानिष्ठा तथा शृंगारिक अलंकरणों में रुचि दिखाई देती है। जालपा के रूप सौन्दर्य और मिलन-स्वभाव से आकृष्ट होकर रतन उससे मैत्री स्थापित करती है।

अकेले से उसका जी घबराता है, अतः वह जालपा से घड़ी आध घड़ी रोज आ जाने की प्रार्थना करती है। इस मैत्री में किसी प्रकार का छल नहीं, स्वार्थ नहीं केवल निश्छल प्रेम है। उसका जालपा तथा रमानाथ से मैत्री-सम्बन्ध उपन्यास की घटनाओं को आगे बढ़ाता है। रतन के कारण ही रमानाथ अपने दफ्तर से रुपयों की थैली लाता है। जिसे जालपा रुपये माँगने पर रतन को दे देती है। रमानाथ रतन से रुपये वापस न माँग सका और इस प्रकार उसे प्रयाग से भाग जाने को बाध्य होना पड़ा।

रतन को आभूषणों, दावतों, उत्सवों आदि से प्रेम अवश्य है, लेकिन वह अपने पति से विशेष

प्रेम करती है। वह एक वृद्ध पति की युवती पत्नी है। लेकिन इस दृष्टि से उसने कभी कोई शिकायत नहीं की।

(2) सहृदयता एवं दयाशील प्रवृत्ति – अपने विवाहित जीवन में रतन सहृदय एवं कृपालु है। उसे दूसरों का दु:ख-दर्द अनुभव करना आता है। रमानाथ के भाग जाने के बाद वह जालपा के प्रति सहृदय हो उठती है और उसके कंगन खरीद कर उसकी सहायता करती है। यही नहीं पति का इलाज कराने के लिए कलकत्ता जाने से पहले वह कुछ रुपये जालपा के पास सहायतार्थ रख जाना चाहती है। शतरंज के नक्शे को 'प्रजामित्र' समाचार पत्र में भेजते समय उपहार के लिए पचास रुपये वही देती है। वह कलकत्ता जाकर रमानाथ को खोजने का प्रयास करती है। इस प्रकार उसे अपने धनी होने का अभिमान नहीं है और वह जालपा को अपनी बहन समझकर उसकी सहायता करती है।

वह इस सहृदयता को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि हृदय की प्रेरणा से करती है। उसके चरित्र में कहीं भी मिथ्या-प्रदर्शन एवं अभिमान की प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। उसके चरित्र में जो कुछ भी दुर्गुण थे उनको वह पति की मृत्यु के बाद याद करती है। पति की मृत्यु होते ही उसने पति के शीतल चरणों पर सिर झुका दिया और बिलख-बिलख कर रोने लगी।

(3) विधवा रूप –

रतन के जीवन का दूसरा अध्याय उसके पति की मृत्यु से आरंभ होता है। पति की मृत्यु के उपरांत श्राद्ध के दिन उसने अपनी

सारी बातें जालपा से कहती है, मुझे तो कभी यह ख्याल नहीं आया बहन कि मैं युवती हूँ। वस्त्र और आभूषण महापात्र को दान कर दिए। उसका स्वभाव कोमल हो गया और पति के गुणगान के अतिरिक्त अन्य किसी भाव को मन में लाना यह पाप समझने लगी। वकील साहब की मृत्यु के बाद उनका भतीजा मणिभूषण आकर सारी संपत्ति पर अधिकार करना प्रारंभ कर देता है। रतन को उसकी चालबाजियाँ ज्ञात नहीं होतीं, क्योंकि शोक और मनस्ताप ने उनके मन को इतना कोमल बना दिया था कि उस पर किसी की छाप पड़ सकती थी, उसे किसी पर संदेह न था, किसी से शंका नहीं थी, कदाचित उसके सामने कोई चोर भी उसकी सम्पत्ति का अपहरण करता तो वह शोर न मचाती।

रतन रमानाथ और देवीदीन के साथ रहने लगती है। देवीदीन उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है और उसे बड़े उच्च विचार की औरत मानता है। रतन जोहरा को अपना स्नेह एवं सहानुभूति प्रदान करती है। रतन का अंतिम समय अत्यंत मार्मिक है। देवीदीन, जालपा, जोहरा, राजेश्वरी के बीच वह अपने प्राण त्याग देती है। इस प्रकार यह चरित्र यथार्थ से आदर्श तक पहुँचने के बाद इस संसार से उठ जाता है। प्रेमचंद ने उसके चरित्र में भी आदर्शवाद के तत्वों को समाहित कर दिया।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी- विभाग
डी. के. कॉलेज, डुमराँव बक्सर